International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

परमारकालीन हाथीथान/गजशाला

वर्ष 950 ईस्वी, कालांतर से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

दीपक गायकवाड़

शोधार्थी
इतिहास संकाय (पी.एच.डी.), 2022
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

शोधपत्र
शोधपत्र में परमारवंशी प्रतापी राजा भोजदेव परमार एवं अन्य राजाओं द्वारा गजों के आवास हेतु तैयार मध्यकालीन हाथीथानों/गजशालाओं/हाथीखूंटो की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, निर्माण संरचना, वर्तमान प्रासंगिकता एवं ऐतिहासिक धरोहरों के रूप में भूमिका का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया गया हैं। शोधपत्र में मध्यकालीन परमारवंशी राजाओं की वास्तुकला और नगर नियोजन में निपुणता कौशल तथा युद्धकला में पारंगता के प्रत्यक्षीकरण प्रमाण के रूप अडिग एवं 1000 वर्षो से यूँ ही अभेद खड़ी इन गजशालाओं को वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक अवलोकन कर सारभूत तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

सारांश
नौंवी शताब्दी से तेरहवी शताब्दी ईस्वी में मालवा–निमाड़ क्षेत्र, जो वर्तमान में मध्यप्रदेश राज्य में अवस्थित हैं, यहॉ मध्यकाल में परमारवंशी राजाओं का शासन रहा हैं। इन्होंने अपने शासनकाल में मालवा–निमाड़ क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का युक्तियुक्त उपयोग करते हुए इस क्षेत्र को सांस्कृतिक, धार्मिक, सामरिक उपलब्धियों से अभिभूत कर यहॉ कई बड़े नगरों का निर्माण किया, जिसमें मुख्यतः परमारवंशी राजाओं की पारंपरिक राजधानी नगर **उज्जैयिनी** एवं **राजा भोजदेव परमार** द्वारा नवनिर्मित राजधानी नगर – **धारानगरी** मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। इन नगरों में परमारवंशी राजाओं द्वारा शिक्षा एवं संस्कृति के चहुंओर प्रसार हेतु विश्वस्तरीय शैक्षिक संस्थान यथा **'सरस्वती सदन'** बनवाऐ, जिनमें धारानगरी, माण्डव, उज्जैयिनी एवं चित्तौड़गढ़ में बनाऐ गऐ सरस्वती सदन प्रमुख हैं।

तत्कालीन परमारवंशी शासन की सीमाऍं, पश्चिम में राजपुताना (राजस्थान) गुर्जर, प्रतिहार वंश क्षेत्र, उत्तर में दिल्ली सल्तनत क्षेत्र, दक्षिण पूर्व में कल्चुरी वंश तथा दक्षिण में चोल वंश राज्य की सीमाओं से घिरे होने के कारण मालवा–निमाड़ क्षेत्र सामरिक दृष्टिकोंण से भी महत्वपूर्ण रहा हैं। साथ ही इस क्षेत्र में नर्मदा नदी के अविरल बहाव, विध्यांचल एवं सतपुड़ा जैसे वृहद् पर्वतों की घाटियों में पर्याप्त भू–जलस्तर यहॉ की भूमि को वर्ष भर सिंचित बनाऐ रखते हैं, जिस कारण इस क्षेत्र में कृषि समृद्ध स्थिति में बनी रहती हैं, और इससे मिलने वाला राजस्व एवं उससें एकत्रित कोष सदैव बाहरी राजवंशों तथा आक्रांताओं को इस पर शासन कर विजय करने की लालसा बनाऐ रखता हैं। यही कारण रहा होगा की परमारवंशीय राजाओं ने अपने वास्तुशास्त्रीय उत्तम नगर नियोजन में सुरक्षा/सामरिक दृष्टिकोंण से किए गऐ निर्माणों को अधिक महत्ता प्रदान की जिसमें नगर के चहुंऔर बनाए गऐ **''परिखे''**, घुड़शालाऍं, एवं गजशालाएं प्रमुख हैं।

परमारवंशी राजाओं द्वारा निर्मित नगरों के नियोजन में सुरक्षा/सामरिक दृष्टिकोंण से हाथियों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, यही कारण रहा होगा कि तद्समय परमारवंशी राजाओं ने अपनी सैना में मुख्य रूप से गजों (हाथियों) को सम्मिलित किया था तथा इनके उचित प्रबंधन एवं आवास हेतु अपने नगरों में हाथीथानों,/गजशालाओं/हाथीखुंटो का निर्माण किया। प्राचीन एवं मध्यकालीन ऐतिहासिक राजवंशों में राज्य की शाही सेना में गजों का होना न सिर्फ सांस्कृतिक, सामाजिक, समृद्धशाली होने का प्रतीक हैं, अपितु यह शासन के विराट गौरव एवं शक्ति का भी परिचायक रहें हैं। मौर्य, गुप्त, परमार, राजपुत, मराठा, मुगल, सल्तनत, चोल, संगम आदि राजवंशों में तो इन्हें प्रतीकात्मक रूप से राजकीय मोहरों में भी स्थान दिया गया हैं।

मुख्य शब्द – गजशाला, हाथीथान, हाथीखूंट, रसद, चतुरंगी, कैपरिसन, परिखे, गज ए प्रधान, गजशाला प्रमुख, गजेन्द्र, हस्तिशाला, 'सर्वतोभद्र'

प्रस्तावना–

हाथी प्राचीन काल से हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग रहें हैं। भारतीय संस्कृति हो, धार्मिकता हो या युद्धकौशल, हाथी स्वयं ही विराट भूमिका में रहें हैं। प्राचीन काल से ही हार्थियों को पालने तथा उनके प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था का होना हमें प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथो से ज्ञात होता हैं। हाथियों को रखने के लिए एक विशेष स्थान का निर्माण किया जाता था जिसे **हाथीथान/हाथीखुंट/गजशाला** कहॉ जाता रहा हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता के अनेको स्थलों की खुदाई में प्राप्त तत्कालीन शाही मोहरों पर गजों (हाथियों) की उपस्थिति को स्पष्टःतया देखा जा सकता हैं। उदाहरणार्थ प्रसिद्ध पशुपति मोहर, मोहनजोदारों की एक शाही मोहर थी, जिसमें केन्द्र में एक सींग योगी (कुछ विद्वान इन्हें भगवान शिव का प्रतीक मानते हैं) का प्रतिनिधित्व करता हैं, जिसके केन्द्र में प्रत्येक तरफ दो जानवर यथा बैल एवं हाथी हैं। मोहर में योगी के शीर्ष दाईं और के पास ऊकेरी हुई, हाथी को ऊपर से आने वाली रेखा दिखाई देती हैं, जो कुछ चिलमन या ढंके हुए कपड़े के आवरण के रूप में दर्शित होती हैं।

''अबुल–फजल 1965– आईने अकबरी'' के अंग्रेजी अनुवाद अनुसार **'' कई पशुओं में से 'हाथी' एक था, जिसकी विशाल उपस्थिति और पहाड़ जैसी ताकत को समृद्ध और धार्मिक संस्थानों द्वारा सराहा गया था। शक्ति और देवत्व के इस संयुक्त प्रतीकवाद के कारण हाथियों को विभिन्न प्रकार के आभुषणों और अलंकृत कैपरिसन के साथ सजाने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरती जाती थी। इन कैपरिसन सज्जा से सजाऐ गऐ हाथियों को वंदना, शाही जुलूस, शिकार, हाथी लड़ाई (एक लोकप्रिय मनोरंजक खेल), युद्धों, में महल के संरक्षक द्वारा राजनीतिक और धार्मिक कार्यो हेतु उपयोग में लाया जाता था। साथ ही इन्हें शक्ति के निशान के रूप में भी उपयोग में लाया जाता था''**

हाथी प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहें हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में हाथियों को विशेष महत्व दिया गया हैं, चाहे वह धार्मिक, सांस्कृतिक, युद्ध या सैन्य उद्देश्यों से जुड़ा हो। हाथियों को पालने और उनके लिए विशेष स्थान निर्धारित करने की परंपरा अत्यंत प्राचीन हैं। प्राचीन भारत में राजाओं और सम्राटों के दरबार में हाथियों के लिए विशेष स्थान होते थें, जिन्हें **हाथीथान/हाथीखुंट/गजशाला** नामों से जाना जाता था। हाथियों की देखभाल तथा प्रशिक्षण हेतु अनेक अधिकारी जिन्हें विभिन्न राजवंशों में **गज ए प्रधान**, **गजशाला प्रमुख**, **गजेन्द्र** आदि पदों पर नियुक्त किया जाता था। युद्ध तथा सैन्य अभियानों में हाथियों की विशेष भूमिका रही हैं फिर चाहे वह युद्ध लड़ना हो, मजबुत किले का द्वार भेदना हो, भारी पत्थरों/लकड़ों को ढोना हो या **'रसद'** एक स्थान से दूसरे स्थान लें जाना हो, हाथी हमेशा ही मुख्य भूमिका में रहें हैं। हमारे महाकाव्यों यथा **'रामायण'** एवं **'महाभारत'** या प्राचीन भारत के अनेकों युद्धों में गजसेना, चतुरंगी सेना का वर्णन हमें देखनें को मिलता हैं।

'कौटिल्य' ने भी अपनी कृति 'अर्थशास्त्र' में हाथी से संबंधित दो प्रकरण यथा **''हस्त्यह्यस्''** एवं **''हास्तिप्रचार''** की रचना की हैं, जिसमें कौटिल्य द्वारा वर्णन किया गया हैं कि, ''हाथी की लंबाई से दोगुनी ऊॅची तथा चौड़ी हस्तिशाला (हाथीतबेला) और उसमें हाथी–हथिनी के रहने के कमरे जुड़े हुए बनाए जाए। बीच–बीच में लोहे के खुंट गढ़े हुए हो। उसका मुॅह पूर्व या उत्तर और बरांडा आगे से झुका हुआ हो'' ''हाथी की लंबाई जितना लंबा–चौड़ा फर्श बनाया जाए जिसमें पैशाब तथा लीद के बाहर निकलने का स्थान पृथक से बना हुआ हो। उनके रहने के स्थान के बराबर सोने का स्थान बनाना चाहिए जो कि आकृति में आधा हो''। **(विद्यालंङकार, 1923, पृं.सं.–123)**

कार्य के अनुसार गजों (हाथियों) के 04 प्रकार कौटिल्य द्वारा बताए गऐ हैं –

- दम्य – शिक्षण योग्य
- सान्नाह्य – युद्ध योग्य
- औपवाह्य – सवारी योग्य
- व्याल – मदमत्त या शरारती **(विद्यालंङकार, 1923, पृं.सं.–123)**

हमारा यह शोधपत्र राजा भोज द्वारा धारानगरी में वास्तुनुरूप स्थापित हाथीथान की वास्तुशास्त्रीय विशेषताओं, निर्माण तकनीक तथा युद्ध में उनके महत्व पर जानकारी प्रस्तुत करेंगा, साथ ही वर्तमान में इन हाथीथान भवनों की भौतिक उपस्थिति को इतिहास के पन्नों से पुनः जोड़े जाने के प्रयास की दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध होगा।

शोध का मुख्य भाग (Main Body Of The Research) :–

सुरक्षा एवं सामरिक के दृष्टिकोंण कई विशाल संरचनाओं का निर्माण किया, उत्कृष्ट प्रतिभा के धनी परमार वंशीय राजा भोज (1010–1055 ई.) का मालवा सहित समूचे मध्यप्रदेश पर वर्चस्व रहा हैं। परमार राजा भोज द्वारा तत्कालीन परमारवंशी राजधानी– धारानगरी में वास्तुनुरूप हाथियों के आवास के लिए विशेष स्थान हाथीथान का निर्माण किया गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में हाथियों का स्थान महत्वपूर्ण रहा हैं, हाथी युद्ध में राजा की सेना का अंग होने के साथ साथ धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी भारतीय समाज में समाहित थे। हमारे इस शोध पत्र में हमने प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोंतो के माध्यम से राजा भोज द्वारा निर्मित हाथीथान की वास्तुशास्त्रीय संरचना को समाज के समक्ष लाने का प्रयास किया हैं तथा हाथियों का मानव समाज में क्या स्थान था, को भी चिन्हित करने का प्रयास किया गया हैं। वर्तमान परिवेश और आधुनिकता के इस दौर में हाथीथान जैसी संरचनाये विलुप्त होती जा रही हैं। हमारे शोध का उद्देश्य इन प्राचीन संरचनाओं का अध्ययन कर भारत की स्थापत्य कलाओं और पशु प्रबंधन के बारे में अध्ययन करना हैं हमारा ये शोध भारत की सांस्कृतिक और युद्ध परम्पराओं को संरक्षित करनें में सहायक हो सकता हैं।

परमारवंशी गजशालाएँ–

परमार वंश मध्यकालीन भारत के महत्वपूर्ण राजवंशों में से एक राजपुत वंश था, जिसने 9 वी शताब्दी से 14 वीं शताब्दी के मध्य मालवा तथा निमाड़ क्षेत्र पर शासन किया। परमार राजा अपनी सैन्य शक्ति एवं कला–संस्कृति के संरक्षण के लिए विशेष रूप से जाने जाते थे। परमारवंशी गजशालाएँ न केवल हाथियों के रहने का स्थान था, अपितु यह शाही शक्ति, सैन्य तैयारी और सांस्कृतिक परंपराओं का भी प्रतीक रही हैं।

- **सामरिक महत्व** – परमार राजाओं की सेनाओं में गजों (हाथियों) का अधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। युद्ध में हाथियों का उपयोग किले तोड़ने, शत्रु सेना को तितर–बितर कर बिखेरने, और शाही सवारी के लिए किया जाता था।
- **परमार वंश का विस्तार एवं गजशालाओं की स्थिति** – परमार वंश का शासन केवल मालवा तक ही सिमित नहीं था, बल्कि इनका राज्य विस्तार गुजरात, राजस्थान के कुछ क्षेत्रों तक विस्तारित था, यही कारण हैं कि इन जगहों पर भी गजशालाओं के अवशेष ज्ञात होते हैं।
- **राजधानी और संरचनाएँ** – परमार वंश के राजाओं ने कई देवालयों और किलों का निर्माण किया था। इन संरचनाओं में हाथियों के लिए विशेष संरचनाएँ बनवाई गई थी, जो हाथीथान/गजशाला/हाथीखूंट के नाम से प्रसिद्ध रही हैं। परमार वंश की राजधानी यथा उज्जैयिनी एवं धारानगरी में इन गजशालाओं के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। इनमें से धारानगरी के में अवस्थित हाथीथान/गजशाला जो तात्कालिक परमार नरेश राजा भोजदेव द्वारा निर्मित कराई गई होना संभावित हैं, का हमारे द्वारा भौतिक अवलोकन किया जाकर इसकी निर्माण संरचनाओं अनुसार इसके वास्तुशैली, सांस्कृतिक, सामरिक महत्वों से संबंधित तथ्यों को संग्रहित करने का प्रयास किया गया हैं जो इस प्रकार हैं–

परमारकालीन गजशाला

राजा भोज की धारानगरी के नगर–नियोजन अंतर्गत निर्मित हाथीथान/गजशालाएँ, जो आज भी 1000 वर्षो के व्यतीत हो जाने उपरांत भी अभेद्य एवं सुरक्षित खड़े हुए हैं– इनमें प्रमुखतः धारानगरी में उत्तर दिशा की और तात्कालिक ब्रम्हज्ञानियों एवं सन्यासियों हेतु स्थापित बस्तियों के बाहर बने हाथीथान क्षेत्र में 02 से अधिक गजशालाऐ निर्मित की गई थी, जिनमें से आज 02 गजशालाएँ सुरक्षित होकर व्यवस्थित खड़ी हुई हैं। राजा भोज द्वारा लिखित ग्रंथ **'समरांगणसुत्रधार'** में उल्लेखित गज–शाला अध्याय में विभिन्न प्रकार की गजशालाओं की निर्माणशैली एवं इनके महत्व को दर्शाया गया हैं इनमें प्रमुखतः 06 गजशालाऐ हैं, जो इस प्रकार हैं–

सुभद्रा – गजशाला	चारों दिशाओं में स्थित दीवारों में 02–02 गवाक्षों (झरोखें) का तथा अग्रभाग में प्राग्रीव (पूर्वी द्वार) निर्मित हों।	हाथियों के श्वसन हेतु शुभ
नंदिनी – गजशाला	इस शाला के सम्मुख 02 पक्ष – प्राग्रीव (पूर्वी द्वार) होंवे।	हाथियों की वृद्वि/ विकास हेतु शुभ
सुभोगदा – गजशाला	इस शाला के दोनो तरफ जब दोनों प्राग्रीवों (पूर्वी द्वारों) का सन्निवेंश होवें।	
भद्रिका – गजशाला	इस शाला के पीछे जब दूसरा प्राग्रीव (पूर्वी द्वार) निर्मित हो	हाथियों को पूष्टि देने में सहायक
वर्पिणी – गजशाला	यह शाला चौकोर आकृति की होती हैं	
प्रमारिका – गजशाला	यह शाला प्राग्रीव, अलिन्द, निर्यूह से विहीन बताई गई हैं	हाथियों हेतु अशुभ

(शुक्ल, 1967, पृं.सं.–26, 27)

'समरांगणसुत्रधार' ग्रंथ अनुसार उन्नत (standard) गजशाला –

चिन्हित स्थल को चौकोर क्षेत्र बनाकर 08 भागो में विभाजित करें, मध्य 02 भागो में विस्तृत हाथी का स्थान बनावें। प्रासाद के समान क्रमशः ज्येष्ठ, मध्यम और अधम गजशालाओं के भागो का प्रकल्पन करें। इसके बाहर 01 भाग में अलिन्द (मार्ग हेतु खुला स्थान) और उसके भी बाहर दूसरा अलिन्द निर्माण करना चाहिए, साथ ही 01 भाग से भित्ती (दीवार) का निर्माण भी दूसरे अलिन्द से बाहर करना चाहिए। गजशाला के दरवाजे पर 02 कूर्परों (खड्ड) का निर्माण करना चाहिये और दूसरे अलिन्द के सहारे कर्ण–प्रासादिका (गजो के कानों में आवाज हेतु) का निर्माण करना चाहिए।

इन गजशालाओं का विस्तृत अध्ययन करने पर ज्ञात होता हैं कि, जिस व्यास, आकृतियों का उल्लेख राजा भोज ने अपने ग्रंथ **'समरांगणसुत्रधार'** में उल्लेखित नगर–नियोजन अंतर्गत प्रचलित **'सर्वतोभद्र'** आकृति में किया हैं, उन्हीं समानताओं को धारण किए 02 गजशालाएँ धारानगरी के उत्तर दिशा की और स्थित **'केन्द्रीय विद्यालय परिसर– धार'** में भी स्थित हैं। जो कि 01 पठार रूपी भूस्थलाकृति पर काले पाषाणों (पत्थरों) के 03 फीट उँचे औटले पर, टेराकोटा मिट्टी से निर्मित ईंटो के माध्यम से संरचित की गई हैं, साथ ही इन्हें प्राकृतिक बदलाव से संरक्षित करने तथा

सुसज्जित करने हेतु लाईमस्टोन (चुना पत्थर) का लेपन किया जाना पाया गया हैं, जो कि परमारकालीन भवनों के भूमिजा, निर्माणशैली की महत्वपूर्ण विशेषता भी रही हैं।

इनकी आकारिकी की माप, उत्तर से दक्षिण दिशा की और – लगभग **3 मीटर उॅचाई** (बिना आर्च के), **8.5 मीटर चौड़ाई** तथा **9.75 मीटर उॅचाई** (आर्च सहित) हैं। मध्य में अलिंद (द्वारो) के ऊपर **'अर्द्धचंद्राकार'** की आकृतियां निर्मित हैं। साथ ही यदि इनकी वर्तमान आकारिकी की तुलना **'समरांगणसुत्रधार'** ग्रंथ से किए जाने पर उपरोक्तानुसार उल्लेखित आकृतियॉ – **सुभद्रा तथा नंदिनी गजशाला** जैसी समानताएॅ पाई जाती हैं। यह गजशालाएॅ उन्हीं दिशा एवं उल्लेखित स्थलों पर गत् 1000 से अधिक वर्षो से स्थित हैं, जहॉ राजा भोज के नगर–नियोजन अंतर्गत संभवतः इनकी स्थापनाएॅ तद्समय किया जाना ज्ञात होता हैं। इन गजशालाओं में क्रमशः उत्तर से दक्षिण की और **02 अलिंद** (द्वार) हैं, जिनकी उॅचाई लगभग 9 मीटर हैं, पूर्व तथा पश्चिम दिशा में **03–03 गवाक्ष** (झरोखें) निर्मित हैं, जिनकी उॅचाई लगभग 4–6 मीटर हैं। इन गजशालाओं के ऊपरी भाग वर्तमान में क्षतिग्रस्त हैं, परंतु संभवतः निर्माण के समय यहॉ लाल ईंटो की जालीनुमा छत बनाई गई थी, जिसके अवशेष आज भी कहीं–कहीं प्रत्यक्षतः नजर आते हैं।

यह गजशालाएॅ जो धारानगरी के हाथीथान क्षेत्र में स्थित होकर, अपने ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व को विश्व के दृष्टिपटल पर अंकित करती हैं वर्तमान में अपने संरक्षण एवं पुनरूद्धार की अपेक्षा लिए 1000 वर्षो के इतिहास को अपने अंदर संजोए हुए हैं।

शोध के उद्देश्य – मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अवस्थित संरचनाओं यथा हाथीथानों/गजशालाओं के तात्कालिक सांस्कृतिक, सामाजिक, सामरिक एवं वैभवशाली होने के प्रतीकों संबंधी तथ्यों को प्रकाश में लाना तथा इन गजशालाओं को मध्यकालीन परमार राजवंशियों द्वारा अपने वास्तुज्ञान, सामरिक कौशल के अनुसार किस प्रकार निर्मित किया गया तथा इनका तात्कालिक महत्व एवं वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाना शोध का मुख्य उद्देश्य हैं, साथ ही हमारे शोध में प्रकाशित तथ्यों अनुरूप इन ऐतिहासिक महत्व की गजशालाओं को भारतीय/राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षण प्राप्त हो सकें, इस दिशा में प्रयास करना मात्र हैं।

4. साहित्य की समीक्षा (Literature review) –

1. **"Ancient India as described By Megasthanees and ARRIAN" – JW. Macrindle –1877 -** इस पुस्तक में लेखक द्वारा मैंगास्थनीज की पुस्तक **'इंडिका'** के वर्णन अनुसार मौर्यकालीन समाज तथा युद्ध में हाथियों के महत्व के बारे में चर्चा किया जाना बताया गया हैं, साथ ही पुस्तक अनुसार मैंगास्थनीज कहते हैं कि, ''हाथी को राजा की विशेष संपत्ति माना जाता हैं, उनकी देखभाल के लिए विशेष व्यक्तियों कि नियुक्ति की जाती हैं''। **(MC CRINDLE, 1877, पृं.सं.–90)**
लेखक के अनुसार एरियन अपनी कृति **'इंडिका'** में हाथी को राजसी लोगो का वाहन कहते हैं, वे लिखते हैं कि, ''आम लोग ऊॅट, घोड़े एवं गधे की सवारी करते हैं, जबकि अमीर लोग हाथी पर सवारी करते हैं''। **(MC CRINDLE, 1877, पृं.सं.–222)**
2. **''बाबरनामा'' – सुन्शीदेवीप्रसाद कायस्थ (अनुवादक)–1936** –लेखक के अनुसार बाबरनामा में बाबर ने हाथी के लिए **''फील''** शब्द का उपयोग किया हैं, इसमें वह हाथी की शक्ति, बुद्धिमता और इसके सैन्य उपयोग का वर्णन कर कहते हैं कि ''हर एक लश्कर अपनी फौज के साथ कई हाथी रखता हैं'' ''हाथी में ताकत और समझबुझ भी खुब होती हैं वह बड़े दरियाओं और तेज बहने वाली नदियों से बहुत सा बोझा ले कर सहज से उतर जाता हैं'' ''जिन गाड़ियों को 400–500 व्यक्ति खींचते हैं, उनको 2–3 हाथी युॅ ही खींच ले जाते हैं''। **(कायस्थ, 1936, पृं.सं.– 07)**
3. **राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की पुस्तक 'सैन्य वर्णन–2020'** – इस पुस्तक के वर्णनानुसार प्राचीन युग में युद्धों में हाथियों की विशेष महत्ता रही हैं, हाथी सेना का विशेष अंग होता था, महाभारत में भी हमें ''अक्षोहिणी'' सेना के बारे में विवरण मिलता हैं तथा प्राचीन काल के अनेक राजवंशों यथा मौर्य, गुप्तों में भी ''चतुरंगी सेना'' का उपयोग होना बताया गया हैं। जिसमें हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल सैनिक होते थें''। **(सैन्य अध्ययन, 2020, पृं.सं.–18)**
4. **''हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन–1953''– लेखक, वासुदेवशरण अग्रवाल–** लेखक द्वारा इस पुस्तक के वर्णन में वर्णित तथ्य को प्रस्तुत करते हुए कहां हैं कि, ''बाण ने हाथियों की सेना और उसमें नियुक्त अधिकारियों का विस्तृत विवरण दिया हैं'' उसके अनुसार जब बाणभट्ट ने हर्ष के स्कन्धावार में प्रवेश किया तब उसने राजद्वार के बाहर हाथियों का बाड़ा देखा था''। **(अग्रवाल, 1953, पृं.सं.–129)**

5. **''भारतीय मुगलों की सैन्य व्यवस्था– विलियम इरविन''– श्री रमेश तिवारी, (अनुवादक)–** इसमें लेखक पुस्तक के वर्णन अनुसार कहते हैं कि, मुगलकाल में ''किलो के फाटक को तोड़ने के लिए भी हाथियों का उपयोग किया जाता था इसी वजह से किलो के फाटक इस्पात कि चादरों और कीलों से जड़े होते थे''। **(तिवारी, पृं.सं.– 164)**

6. **''नीतिवाक्यामृतम्'' 1972**– श्री रामचन्द्र मालवीय– लेखक द्वारा इस पुस्तक में वर्णन करते हुए कहॉ हैं कि, **''हस्तिप्रधानों विजयो राज्ञां यदेकोळपिहरूनी सहस्त्रं योधयति न सीदति प्रहारसहस्त्रेनापि''** अर्थात् राजाओं की विजय में हाथी प्रधान कारण होता हैं, अतः अकेला हाथी हजार योद्धाओं से लड़ता हैं और हजार प्रहार होने पर भी पीड़ित नहीं होता''। इस पुस्तक में हाथियों की 04 जातियॉ यथा– मंद, मृग, संकीण और भद्र तथा 08 कुल ऐरावत, पुण्डरिक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत और सार्वभौम के बारे में बताया गया हैं। **(मालवीय, 1972, पृ.सं.– 111)**

7. **''समरांगणसुत्रधार–वास्तु–शास्त्रीय राज निवेश एवं राजसी कलाये, 1967– डॉ. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल–** इस पुस्तक में लेखक वर्णन करते हैं कि, वास्तुशास्त्र अनुसार इस ग्रंथ एक अंग में राजनिवेश एवं राजनिवशोचित–भवन–उपभवन तथा उपकरण के उपअंग के रूप में **गजशाला** की विस्तार से चर्चा कि गई हैं। इसमें गजशाला के बनाने के लक्षण के बारे में विवरण दिया गया हैं। वास्तुनुरूप गजशाला न बनाने के प्रभाव तथा बनाऐ जाने पर लाभो के बारे में विस्तार से चर्चा की गई हैं।

8.

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) :–

हमारे शोधपत्र के अनुसांधानिक विषय ऐतिहासिक और पुरातात्विक अध्ययन के हैं इसलिए उपयोग की गई अनुसंधान पद्धतियों का विवरण इस प्रकार हैं–

1. **वर्णनात्मक शोध पद्धति** (Discriptive Methodology) – शोध में तथ्यों की खोज एवं उनके प्रमाणिकरण हेतु वर्णनात्मक शोध पद्धति (Discriptive Methodology) का उपयोग गजशालाओं के भूमिजा वास्तुशैली अनुसार निर्माण उनकी तथा माननकीकरण पर आधारित भौतिक संरचनाओं का वर्णन किया गया हैं।

2. **तथ्य संग्रहण पद्धति** (Data Collection Method) – प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोंतो द्वारा पुरातात्विक महत्व के भवनों यथा हाथीथान/गजशाला/हाथीखूंट, संरचनाओं का भौतिक निरीक्षण कर तथ्य संग्रह किया गया।

3. **ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति** (Historical & Comparative Method)– अभिलेखीय साक्ष्यों/ऐतिहासिक तथ्यों एवं पुरातात्विक साक्ष्यों को वर्तमान प्राप्त तथ्यों से तुलना कर उनके ऐतिहासिक महत्व के प्रमाणन पर कार्य किया गया।

4. **संरचनात्मक विश्लेषण पद्धति** (Structural Analysis Method)– योजनाबद्ध तरीके से धारानगरी (धार) में स्थित हाथीथान/गजशाला/हाथीखूंट के संरचनात्मक ढॉचे का ज्ञात ऐतिहासिक तथ्यों अनुरूप तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

परिकल्पनाऍ (Hypothesis) :–

परमार राजाओं द्वारा युद्ध एवं सामरिक कौशल को उन्नत स्थिति में पहुॅचाऐ जाने के लिए अपनी सैन्य व्यवस्था में हाथियों का उपयोग किया गया उन हाथियों के आवास स्थान हाथीथान/गजशाला/हाथीखूंटों की भौतिक संरचनाऍ भूमिजा वास्तुशैली अनुरूप निर्मित की गई होगी। इन संरचनाओं का निर्माण उत्तम नगर–नियोजन अंतर्गत किया गया होगा। नगर सुरक्षा की दृष्टि से इन हाथीथान/गजशाला/हाथीखूंटों को नगर के बाहर निर्धारित दिशा एवं ऊॅचाई पर ही निर्मित किया गया होगा। तात्कालिक परमार वंशी राजाओं द्वारा विभिन्न युद्धों में उपयोग किए जाने वाले हाथियों के आवास हेतु इन गजशालाओं का निर्माण किया गया होगा।

निष्कर्ष (Conclusion)–

हमारे प्रस्तुत शोध में राजा भोजदेव द्वारा रचित ग्रंथ **'समरांगणसुत्रधार'** में उल्लेखित नगर नियोजन आकृति सर्वतोभद्र अनुरूप ही धारानगरी में निर्मित गजशालाओं की वास्तु संरचनाओं का भूमिजा शैली से निर्मित होना तथा इनका परमार वंशी राजाओं द्वारा निर्माण किया जाना, निष्कर्षतः ज्ञात होता हैं। इसके अन्यत्र नवीन तथ्यों की संभावनाऍ सदैव रहेंगी इसे नकारा नहीं जा सकता हैं।

समस्या समाधान एवं सुझाव (Problem & their Solutions):–

ज्ञात तथ्यों से यह स्पष्ट हैं कि मध्यकालीन परमार राजाओं की राजधानी धारानगरी वर्तमान धार नगर में स्थित हाथीथान/गजशालाओं का निर्माण परमार राजाओं द्वारा करवाया गया था। इनके निर्माण संरचनाओं तथा उनमें उपयोग

की गई वास्तुशैली के अध्ययन उपरांत इन्हें ऐतिहासिक महत्व तथा इतिहास में प्रमुख स्थान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। धार नगर में स्थित इन हाथीथान/गजशालाओं को ऐतिहासिक महत्व के भवनों के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए इन्हें भारतीय/राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया जाना चाहिए, जिससे इनकी हेरिटज वेल्यु एवं सांस्कृतिक महत्व का भी संरक्षण हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibiliography) :–

1- सैन्य अध्ययन. (2020). राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान।
2- विद्यालंङ्कार श्रीयुत प्राणनाथ. (1923). अर्थशास्त्र. मोतीलाल बनारसी दास, लाहौर।
3- MC Crindle, JW. (1877). Ancient India as Described By Megasthanees And ARRIAN. THACKER, SPINK & CO. (Bombay & Culcutta, TRUBNER & CO. (London) A
4- कायस्थ, सुन्शीदेवीप्रसाद . (1936) . बाबरनामा . रजवी प्रेस दिल्ली ।
5- अग्रवाल, वासुदेवशरण . (1953) . हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन . बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
6- तिवारी, रमेश . भारतीय मुगलों की सैन्य व्यवस्था (विलियम इरविन) . इतिहास प्रकाशन संस्थान, इलाहाबाद।
7- मालवीय, रामचन्द्र . (1972) . नीतिवाक्यामृतम् . चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
8- वर्मा, शिवप्रसाद . (2014) . समरांगणसुत्रधार एवं मयमतम् के आलोक में अभियांत्रिकी (महषि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय) ।
9- शुक्ल, डॉ. द्विजेन्द्रनाथ . (1967) . समरांगणसुत्रधार–वास्तु–शास्त्रीय राजनिवेश एवं राजसी कलाएँ . वास्तु–वाड्.मय–प्रकाशन–शाला, लखनऊ।
10- राजपुरोहित, डॉ. भगवतीलाल . (2008) . श्री भोजिविरचित् युक्तिकल्पतरू . प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली।
11- Abu'l-Fazl. (1965). Ain-I-Akbari. Translated into English by Bloachman. New Delhi: New Imperial, Book Depot.